

શ્રી જૈન ધર્મ પ્રકાશ

JAIN DHARMA · PRAKASH

પુસ્તક દુંડું. માગશર શુદ્ધ. ૧૫ જુલાઈ. ૧૯૪૭. અ. ક. ૮૮૮

માલિની

પ્રશાસ રસ નિમગ્ન, દાટિયુગમ પ્રસંગ;
વદન કપલ મંક; કામિની સંગ શૂન્ય;
કર યુગમપિ યત્તે, શાખ સંબંધ બંધ્ય
તદાસિ જગતિ દેવો, વીતરાગ સ્ત્વમેવ ॥૧॥

પ્રગટ કર્તા.

શ્રી જैન ધર્મ પ્રસારક સભા
ભાવનગર

અમદાવાદમાં.

“એંદ્રા વર્નાકુલર પ્રીન્ટિંગ પ્રેસમા”
શાંતનુભાઈ રતનચંદ્ર છાપી પ્રસિદ્ધ કથ્ય.
શક ૧૯૧૨. સત ૧૯૫૦.

મૂલ્ય વર્ષ ૧ નો ૩૧-૦-૦ અગાહી પોર્ટેજ ૩૦-૩-૦ રૂ.૬
કુરુક્ષણ અંક એકના ૩૦-૨-૦

अनुक्रमणिका.

विषय	पृष्ठ
१ प्रभोत्तर (लखनार मुनीराज और्यामारामल)	१२६
२ चरचापत्र (लखनार जनी ल्यालाल हेठलगढ़)	१३४
३ श्री वलस्यामीतुं चरित्र.	१३८
४ प्रतीकमध्य.	१४२
५ वर्तमान चरित्र (श्री मुर्शीदाज्ञामां समवसरणुनो महोऽच्छव).	१४४

भास सूचीना.

ज्ञानतुं खडु भान शानावरथी कर्मनो क्षय करे छे अने
शाननी आसातनाथी शानावरथी कर्म खांवाय छे भाए चोपा-
नीचाने रघुतुं न भेतां ऊंचे आसने सुकुमुं अने आवांत
लक्षपुरुक वांची चोपाजिं कर्म फार्मां प्रवर्ततुं.

आहुकोने चेतवणी.

जे आहुकोनुं लवाज्ञम नहीं आवेलुं तेमनी उपर पत
लभी पेस्ट अर्च कर्यो छे तो इवे खीन विलंबे लवाज्ञम भो-
क्लावतुं लवाज्ञम भोक्लानारा आहुकोने लेट तरीक वे युक
आ वर्षमां आपवानी छे तेना लाल भोड लवाज्ञम भोक्ल-
नाराने भणी शाकशी नहीं अमारा परहेशना अज्ञेयाना नाम
गाया अंडमां आपेलां छे. उपरांत नीचे जण्डावेला अज्ञेयाने
अरवाथी पण्ड अमने पहुंचये.

श्री वडोदरा—जवेदी. सद्गच्छ विद्यालय. सुलतानपट्ट.

श्री भांडवी. कर्जु—शा. जेवांत वीजपार. ठे. आण्या भजर,

श्री लुज. कर्जु—शा. देवसीलाई हीमचंद.

श्री वेरावणी—शेठ. गणेश वेललु.

श्री पारभंदर—शोठ. टेवकरणु अवेरचंद.

श्री अडनगड. माणवा—शा. नथुलाई नागशी.

श्री जग्गाम. खातदेश—शा. रामचंद लवराज.

जेहुर अभ्यर.

श्री वाढराजनो. रास. किंमत छ आना.

श्री खाचेलवाणी यति झडपत्तविजयलु इत्यार खंड अने
पहुंचाके संयुक्त वांचनारता भनने रस उत्पत्त करे तेवो नीचे
सही करनार तरक्की छपाइने छोडीसुहृदमां खार पडशो. नाईमे
तेणु पतद्वारा अभर आपवी. पाडणथी किंमत वधारे येसरो.

श्री जेन खाणोहय सखा तरक्की
वाढीलाल आहुम लहोरा.

कु. खारेळा.

श्री जैनधर्म प्रकाश.

JAIN DHARMA PRAKASH.

द्वादशो.

जैनधर्म नाना विषयोंता, भरतर धार्य आकाश;
जैनधर्म भूतण गर्ववत्तु, प्रगटसु कैनप्रकाश. ।

पुस्तक इ कु शक १८१२. कार्तिक शुद्ध १५. संवत् १८४७. अंक छम्बा.

प्रश्नोत्तर.

अनेक गुण संपन्न श्रीमन्महाराज श्री आत्मारामजी
(आनंदविजयजी) एवंगालानी एशीयाटीक
सोसैटीना सेक्रेटरी डाक्तर होर्नलना
प्रश्नोना आपेला उच्चरो.

श्री भन्सुनीराजश्री आत्मारामजी गडाराज तरक्षी तैयार ५२-
वामां आपेलु कैनभत्तवृक्ष छपायाथी तेनी एक नक्कल अक्तर होर्नल
ने भोडवागां आवी ते उपर्युक्त तेणु करेखा प्रश्नो उत्तर सहित आ-
नीचे दाखल कर्या हे.

१ प्रश्न—कैनभत्तवृक्षमें औसा लीझा है “द श्री संभूतिविज-
यशोभद्वसूरि वौरात् १४८ वर्षे देवलोके । ७ श्री संभूतिविजयसूरि

श्री भद्रवाहुमूरि वीरात् १७९ स्वर्ग. भद्रवाहुस्वामी तीन हेद ग्रंथ उद्धता और दशनिर्युक्ति और भद्रवाहु संहिताका कर्ता. उपसर्ग हरस्तोत्रका कर्ता॥ ६४में दुष्ट देव गालग भड़ता है. प्रथम छठे आँकड़े 'संभूतिविज्ञन'नी पासेथी 'य' चाक्षर लुभेहो गया लगता है. और संभूति विज्ञय खुड़कर छवें और सातवेंहोना आँकड़े लिखा गया है? खुड़े ऐक पर्म पट्ट उपविष्ट होजये हैं. संभूतिविज्ञय डान दर्पण निर्वाण प्राप्त हुआहै? श्री सर्वभवसूरिके पट्टपर डैन उपविष्ट हुआ और रथु-गणर इसके पट्टपर उपविष्ट हुआ?

१ उत्तर—८ वें आँकड़े प्रथम संभूतिविज्ञ ठितना चाक्षर विभावै से केषड़ी बुझ है. यहां न आँकड़े. और ७ वें आँकड़े 'वीरात् १७५ स्वर्य' लीखा है सो १७० आँकड़े. सतमें पट्ट उपर संभूतिविज्ञय और अ दृष्टपु देवाणी ऐक साथ स्वापन हु ऐसे मृत वारते होनेका नाम ऐसे साथ लिखाहै और होनेका ऐकड़ी पट्ट वीरात् जाहा है भी आँकड़े १८५ विरात् १८५ तद्दु १८ पर्म ऐके अपार १७० वाँ भद्रवाहुस्वामी रहते.

भद्रवाहु राजा नाम छेद वस्त्र सानोत् १ कृष्ण (इडुर, इद्य) ८-१ गढार सूरा अन स्वा अन रक्ष्य तथा दशनिर्युक्त (१ आवश्यक निर्युक्ति ३ उत्तराध्ययन निर्युक्ति ४ आचारांग निर्युक्ति ५ सूत इतांग निर्युक्ति ६ दशाश्रुत रक्ष्य निर्युक्ति ७ वृद्धत १६५ निर्युक्ति ८ व्यवादारसूत्र निर्युक्ति ९ सूर्य प्रसाति सूत निर्युक्ति १० ऋषि भापित सूत निर्युक्ति भद्रवाहु संहिता तथा उपसर्गहरु स्तोत्रका कर्ता।

श्री सर्वभवसूरिके स्वर्ग पिछे श्री यशोभद्रशुरि पट्टपर ऐडे. रथुगणर यहु संभूतिविज्ञयका शिष्य और भद्रवाहुल्लके पट्टपर ऐडे. किसी ऐक पट्टवणीमें ऐसा लीखा है कि संभूतिविज्ञयके पट्टपर ऐडे तथा किसी ऐक पट्टवणीमें ऐसा केष्ड है कि होनो होडे पट्टपर ऐडे.

२ प्रश्न—८ वें आँकड़े ने श्री स्वृगभद्रके विषयमें लिखित है कि प्रथम वारा वर्षी इनिष्टा हुए और नंदराज्य करताथा सौ चान्य पुरताट में (श्री हुमरदाराज्य के परिसिए गये) श्री भद्रवाहु के विषयमें कहा गया है.

उत्तर—श्री भद्रवाहु ८ वर्षमें स्वृगभद्रल विद्यमान यैर्स वासते

प्रश्नोत्तर.

१३२

श्री हेगवंद्राजायेश्वरा कथन सखे हैं और स्थूलभद्रश्वर के समयमें आराव-
र्पि हुकाल पदा से वी सत्य है।

३ प्रश्न—८ वें अंकमां स्थूलभद्रश्वरा निर्वाचु वीरात् २२५ वर्षमें
कहा गया है। परंतु अन्य पुस्तकमें मेने २१५ होआ है।

उत्तर—हमारे पास एक पुराणे संतती लिखी हुई पटानगीहै
जिसमें २२५ वर्षे सर्वज्ञ विभाव है। और हमरी तागवंशकी पटानगीहै धर्म
सामरेप्याल इन्हैं जिसमें २१५ वर्षे सर्वज्ञ विभाव है। सो सत्य गालुग
होता है। और २२५ वर्षे अंकहैं सो प्रायः करके एकेके स्थानमें हूचा हो
गया होता असा हक्क अतुर्गत करते हैं।

४ प्रश्न—५ वें अंकमें विभाव है कि श्री सर्यालव स्वामी, दक्ष
वैष्णविक सूतका उत्तीर्ण है। परंतु कल्पिमंडल सूत नाम पुस्तकमें विभाव है कि
श्री दशरथीष्वाणि क सूत श्री लद्राजाहुका रक्षा हुआ है।

उत्तर—श्री दशरथीष्वाणि क सूतका उत्तीर्ण श्रीशर्यालवसुरिण विभाव है
सो अलाहौ एकहै और उड़नेवेळे सूतमें निर्मित विभाव है। तथा वी
शदसातुरकामी राक्षसी रक्षा हुई था दशरथीष्वाणिकथाकी निर्मितिमें विभ.
ते हैं उद्देश्यानुक लक्ष्यवस्था रक्षामिहा करी हुई है। आदली धर्मे शास्त्रमें
ओहीन कथनहै। और आज काल सख्ते नैन धर्मियोंमें ओहीन बात
प्रसिद्धहै। और कल्पिमंडलनामा सूत कर्ताने किस अग्रिप्रायसें हक्क होता
सो हमें आलुग नहीं है।

५ प्रश्न—८ में अंकमें हो नाम लिखेहै। “महागिरि और सुहस्ति”
क्याएं होता एकही समय श्री स्थूलभद्र के पटेनिर्मिति होये? और सुहस्ति
श्वरा निर्वाचु वीरात् २६१ वर्षे लिखा है तो क्या उसकी प्रधानता ७६ वर्षे
रहीहै? मेने और पुस्तकमें २६५ वर्षे होआ है और जल्द होतो एकही
वर्षमें स्थूलभद्र के पटेनिर्मिति नहीं होती है तथाहै दोनोंका नाम ओहिं
अंकमें इत्युं लिखे गये, मेने प्रथम् प्रथम् नामली क्राई जगे होये हैं,

उत्तर—वर्ष श्री आर्य महागिरीश ४६ वर्षके हूचे तथ श्री आ-
र्य सुहस्ती स्वामीने अपनी ३० वर्षकी उमरमें दिशा अद्वय करी। आर्य
महागिरीश ४० वर्षतक (अपनी ७० वर्षकी उमर तक) सामान्य पर्यायमें
रहे और आर्यसुह उसी स्वामी २४ वर्ष तक (अपनी ५४ वर्षकी उंगर-
तक) सामान्य पर्यायमें रहे और आर्यार्यपद होतो ओही एक साथ भित्ता।

१३२

श्री कैलासगुरु महारथ,

आर्यपदे ३० वर्षे तक २६५ पिछे आर्य गदागिरिश्च स्वर्गउद्घोषोऽन् प्राप्त और आर्थिक उत्तीस्वामी उभयमें १६ वर्षे छाटे होनेसे ३० वर्षे तक तो साथडी आचार्यपदमें रहे और १६ वर्षे उनोंडे स्वर्गवास पिछे रहे। सर्वे ४५ वर्षेतक आचार्यपदपर रहे। और अरतर गणकी पट्टावणीमें होनोंका गृह्य गृह्य पट्ट लिखा है परंतु तपगच्छकी पट्टावणीमें तो होनोंका एकड़ी पट्टपर लिखा है। कोइकि इन होनोंसे लिखी हो पट्टावणीमां शह छोती है। आर्य गदागिरिश्चसे ज्ञे पट्टावणी श्रीनांदीसूत्रमें लिखी है सो शह हुई है। और आर्य सुदस्तीस्वामीसे ज्ञे पट्टावणी कल्पसूत्रमें लिखी है सो शह हुई है। ऐस वास्ते होनोंका एकड़ी पट्टमें लिखे हीने हैं।

आर्य महागिरिश्च श्री वीरात् २४५ वर्षे स्वर्ग तथा आर्य सुहस्ति स्वामी तदनु १६ वर्षे पिछे आर्थात् श्री वीरात् २६१ वर्षे स्वर्ग हुएं। ओर आपने ज्ञे वीरात् २६५ वर्षे स्वर्ग श्री सुहस्ती स्वामीका लिखा हो सो अरतर गच्छकी पट्टावणीमें है औइकि उस पट्टावणी वासेते श्री स्थूलबद्ध छोड़ा चार वर्ष ज्याहे गीनेहे स्थुगमदछोड़ा स्वर्ग। उस पट्टावणी वासेते २१८ लिखेहै और तपगच्छकी पट्टावणीवासेते २१५ लीजे है ईसवास्ते चार वर्षका हुई है। परंतु हगड़ों उपरवा संवत् २६१ यथार्थ गालम होता है। और २७२ का संवत् ज्ञे गृह्णमें लिखा होसे लेखक होए हुवा है।

६ प्रश्न—६ वें आंकड़े लिखा है कि “महागिरीका शिष्य अहुण तिनका शिष्य उगास्वाति परंतु आपने एक पत्रमें मेरे पर लिखा है कि उगास्वाति अविसंसद्का शिष्य था।

उत्तर—श्री आर्य महागिरिका हो शिष्य अहुण और अविसंसद है और अविसंसदका शिष्य उगास्वाति है परंतु अविसंसदका नाम अहुवधी साथ लिखना भूल गया है।

७ प्रश्न—७ वें आंकड़े लिखा है कि सुप्रतिष्ठुद्ध यहां से निर्ग्रह गच्छः। नाग ड्राविक गच्छ हुसरा हुआ। वीरात् ३०६ वर्षे पत्रवत्सूत्र कर्ता स्यामाचार्यं सूरि” यहां वीरात् ३०६ वर्षे ईशका संघव ड्राविक गच्छमें है वा स्यामाचार्यसे ? यहि स्यामाचार्यसे संघव है तो इन्द्र शंका आती है एवेंकि पहेंसे आपने मेरेपास लिखा है कि स्यामाचार्यका निर्ग्रह विरात् ३५३ वर्षे हुआ।

उत्तर—उगास्वाति वामकाका शिष्य स्यामाचार्य है ज्ञेंद्र कृषका वीरा-

त ३७६ वर्षे रथन है। किसी पट्टावलीमें ३०६ का संवत विखाहै तथा किसी औके पट्टावलीमें ३५३ काली संवत विखाहै परंतु यह ३७६ का संवत यथार्थ मालुम होता है और यह आँक स्यामाचार्यके साथ संबंध रखता है। नान्यत,

८ प्रश्न—गच्छ और दुणि और शाखा और गणु किसको कहते हैं। इन वारोंमें क्या जोड़ है।

उत्तर—गच्छ और गणु प्राय होते। एकार्थ वाचक है। जो गणुका अर्थ है सोई अर्थ गच्छकाहै और इनके अर्थ थी कल्प सतकी पुराणी दीका संदेह विपौष्ठिनामा अथवे ऐसे कहे हैं यतः कुलमेकाचार्य संततिःशाखास्तुतस्यामेवसंततौ पुरुषविशेषाणां पृथगन्वयाःएकवाचना चारयति समुदायोगणःइत्यादि। “एक आचार्यनी संततीने दुणि कहीजो तेज संततिने विषे डाई पुरुष विशेषना प्रथम् प्रथक वंशने शाखा कहीजो अने एक वंशना तथा आचारवाणा यतिना समुदायनो गणु कहीजो अथवा शाखा विवक्षित आदि पुरुषना संतानने शाखा कहीजो जेम वैर राजा निधि वैर नामे शाखा प्रथरीत है। अने दुणि दोऽनन्दिनीं विवेकना गृहक पृथक वंशने कहीजो जेम चान्द्रकुणि, नामेन्द्रकुणि विग्रहे।

९ प्रश्न—जैनमत वृक्षमें परंपरा ऐसी विष्णीहै “३२ श्रावणशेषन ३३ श्री विभगचंद्र ३४ श्री उद्योगतन ३५ श्री सर्वदेव” परंतु तथा गच्छकी पट्टावली जेम भी जैनमें ऐसी परंपरा विषीत है कि “यशोहेव प्रद्युग्म भानहेव विभगचंद्र उद्योगतन, सर्वदेव” यहां ये शोहेव और विभगचंद्र के भृत्यमेहो नाम आधिक हैं।

मुनरपि अरतर गच्छकी एक पट्टावलीमें परंपरा ऐसी विष्णी है कि “यशोहेव, विभगचंद्र, हेव, नेगिचंद्र उद्योगतन, वर्धमान” यहां भी हो नाम आधिक है परं विभगचंद्र और उद्योगतन भृत्ये।

उत्तर—जैनमत वृक्षमें जे परंपरा विष्णी हैसे तपगच्छकी पट्टावली के अनुसार विषीहै। और आपने जे हो नाम आधिक विष्णे है से सस है परंतु ये दोनोंडों पट्टावर नहीं जीने जते हैं ऐसा थी धर्मसांग्रहाचार्य तपगच्छकी पट्टावलीकी दीकामें विष्णने हैं। यतः के नित् श्री प्रद्युग्मसूरि मुग्नानग्रंयप्रणेत्र व्रामानदेवसूरि च पट्टावलयानामन्तो॥

१३४

श्री जैनवर्तमान प्रकाश।

और भगवत्युगुणों पूर्वानु वाक्योंने किस अनिप्रायसे न्यारे होनाम् विशेष इच्छा है संत उमड़ो मालुम नहीं है।

१०. प्रश्न—ज्ञे जैनभत वृक्ष आपने बनाया है सो तपागच्छका भालुम होताहै। वा दूसरे किसी गच्छका है? आपके गच्छका नाम क्या है। और तपागच्छसे क्या संबंध रखता है?

उत्तर—जैनभत वृक्षमें ज्ञे भैय शाखा है सो तपागच्छकी परंपराकी है और भेंटी तपागच्छमें हूँ। तपागच्छके साथ मेरा संबंध ११ में पाठपर ज्ञे श्रीविजयसिंहसूरि, तचित्य श्री सत्य विजयगढ़ी, उमोड़ा चेतेक परिवारमें है।

गापूषुं।

चरचापत्र।

श्रीयुत् जैनवर्तमान प्रकाश मासिकपत्र संपादकः॥

महासंघ! दृपाकर निम्न विभित्ति केरको निज जगत् प्रसिद्ध गांसिक पत्रमें स्थान हे कर मेरा परिवर्ग सदृश भएगे।

महामान्य भिनवर!

आपके पुस्तक ६ अंक ७ आक्षीत शुद्धि १५ के मासिकपत्र पृष्ठ १००-१०१-१०२ में ज्ञे लेख नाथालाल भाष्णुलाल आर्यवर्म पुस्तक प्रसारक अंडणीके भंटीकी तरस्सें छपा है उसका यथार्थ बतार श्रीभानु आर्यभानुराजश्रीश्रीश्री १००८ श्री भद्रि जयानंद सूरीवर्म [आत्मारामश्री] नेही विष्णुदीया है। परंतु कुछ कम्ली निज लेखनी द्वारा विद्वित किया चाहते हैं।

१ प्रथम यह तर्क किया गिया है कि ज्ञे भगुण्य किसी दूसरे धर्म का अंडन करनेपर उभयी होताहै सो अपनी लेखनी द्वां औसी सावधानीसें उठता है जिसमें दूसरा भगुण्य उसका अंडन न कर सके; यह तर्क व्यर्थ है, और इसें तर्क कर्ता की मृदत्ता प्रकट होतीहै। औरकि सावधान रहनातो उन भगुण्योंको आदिये ज्ञे असत्य लेख विभक्तर सत्यवादीयोंसे अवशीत रहते हैं। और न्यायवान पुरुषोंकी लेखनीमें पक्षपात और भयका देशभावशी नहीं होता। ज्ञे शण्ड यथार्थ होता है, वेंडी उनकी से-

ચરચાપત્ર.

૧૩૫

જનીસે વિખા જતા હૈ. પસ દિર તુમહી વિચાર કે “સાચકા આંચ ડુંસી” હમારે ભાદારાજજી યથાર્થ કેખ કરી ઔર સચ્ચે ન્યાયવાન હૈ એવી-ર ઈરીસે ઉનઢા : “ન્યાયાંગોનિધિ” યહ વિશેપણ યથાર્થ હૈ. ઔર યહ સ્વાભી હ્યાતાંદ સરરવતીહીયે જો એક સલાયું પ્રકાશમે : “આંક તરફણ,” ડાં સ્વીકાર કર દૂસરેમે ઉસકો છાપતેવાંકો હી ભૂલ કહ ગયે—જૈતાયાર્થ તો જો કેખ લિખતે હૈ યહ સૂર્યકે સમાન નિઃકલંક પ્રકાશમાન રહેતા હૈ. યદિ કિસી હલ્લુ યુદ્ધિંગ ઉસા પ્રકાશ ન દિખાઈ હેવે તો ઉસકા કર્મી હોય.

૨ દૂસરા તર્ક યહ કિયા ગયા હૈ કે “કર્મવાદ પ્રધાન હૈ તો ચહ મુહૂર્તાટિકડા ક્યૌં માના ગયા” ઈસ તર્કેમાં જી આપકી આદ્યપ્રયત્નાહી સિદ્ધ હુંઠ હે ગિત, કુદ વિચારતો સહી જાણ હમ કર્મહીકા પ્રધાન સમજતે હૈ તો હમકો આચ્છે યુરે કાર્યકાળી વિચાર ચાહિયે—દેખો જાણ અગ્નિ હ-ગારે સંસુખ પ્રયંક હોયાંની હૈ એવી હમ દુસરે આપના જાણ હેવેશે તો વહ જણેગા વા નહીં, જો કહોગે જણેગા તો દિર હમકો અગ્નિ કા સ્વભાવ જાનતેપર ઉસમે જૈસી બસ્તુ ક્યૌં ડાઢની જિસમે હમારી હાનિ હો. ઈસી પ્રકાર જાણ હમ ચહ નક્ષત્રાટિકે શુભાશુક્રકો જાનતે હૈ તો દિર શુભકા અદ્યથી ઔર આશુભકા લાગ કરેં. યહ કર્મકી પ્રધાનતા હૈ મા નહીં. ઔર યદિ તુમે ‘કર્મ’ શબ્દકુ અર્થ દૂસરે પ્રકારસે સમજતે હોતો કુછ દિન સંસ્કૃત વ્યાકરણું પદો જાણ તુમહારી ભરમ યુદ્ધકી મલી-નતા શુદ્ધિ હોયી.

૩ તીસરા તર્ક ભૂગોળ વિદ્યાપર કિયા ગયા હૈ, યહ ચર્ચા એડી ગુંડ હૈ—ઔર તુમહારી યુદ્ધ જે છોટી છોટી ખાતોમે જીવજીતી હૈ—વહ ઈસ ક્ષાયક નહીં હૈ. જે ભૂગોળવિદ્યા બેદ જાન શકે—હમ પૂછતે હૈં જિન ચાર વેદાંકો તુમ જાનતે હોજનસે ભૂગોળવિદ્યા કેખ ભિનતા હુંવા હૈ, વા આપસમે કુછ વિરોધ હૈને કહોગે વિરોધ હૈ તો પ્રથમ આપના ધર હીક કરો જાણ ચરચા કરના. ઔર જે કહોગે વિરોધ નહીં હૈ તો ઉસમે જ્યાં જ્યાં વિરોધી કેખ હૈ વહ હમ દિખાના સકેંગો.

૪ ચોથા તર્ક ‘રાજાનો દદતે સૌલ્યમું’ ઈસ બાક્ય પરકિયા હૈ ય હતો મહામૂલ્યાંહી પગટ કરી કેસે કાઈ મનુષ્ય કિસી ગંધાર (મૂર્ખ) સેં કહે ‘તેરામાર્દ જોણાંસે ૧૦૦૦ મૈન્ અથીત કલકત્તે ગયા હૈ જિસકે સ-માચારાં હો ઘડીમે મંગાદેવે’ તો વહંગંવાર બિશ્વાસ નહીં કરેગા ક્યોં

१३६

श्री कैत्यर्थी प्रकाशः।

कि वह तारकी शक्तिका जोहि नहीं है, परंतु यही शक्ति जब्तु किसी आवेद्ये
पठे भगुष्यसें कहा जय वह तत्त्वात् प्रभाशु करेगा ईसी प्रकार भूर्वैक्षण
शक्ति के आठ लाख आ सदृश गानी तो आठ डोउ अर्थमी भान
लेगा। परंतु मुझां नंदियोंका एक अर्थमी सगजना कठीन है। सो हर आ
करे छनकी युद्धि—

५ भांय वायह तर्क है कि स्वामी द्यानंद सरस्वती पर कहे वयन
लिख वर्थ्य कागज बिगाड़े, यह तर्कभी जूहा है जिस भगुष्य कोध कातुरे
गद (नशा) चड़लता है उसको सभ दुष्ट स्वर्णि तुल्य दृष्ट पड़ता है ईसी
प्रकार प्रथं कर्त्ताकी आंगोंमें द्यानंदी शबादा अली गई अण उसको सभ
कहे वयनही दिखते हैं जियारतो करो स्वामी द्यानंद सर-
स्वतीने वेदोंका वडी अर्थ कियाने पूर्वायोंने कियाथा तो यह जिनकी अ-
शान चेष्ठा है न्ते पीसे आंधिर पीसा और न्ते नवीन अर्थ कियातो शास्त्र
विद्यकुवा अस होनो प्रकारसें स्वामी द्यानंदकाही अभ वर्थ्य ऐ-
२ नाइक कागज बिगाड़ा चिक्क होता है।

६ उे यह तर्क 'जैती ससवेद उनको भानते हैं जे श्रीगान् काषभदेव
स्वामी के सभयसें हैं ऐसा एक्षेनसें वेद प्राचीन सिद्धलुपे' यह बी
णी जूल है ईओडि एक भगुष्यने निज पुत्रका नाम 'आदशाह' धर लिया
उया वह भाचीन वादशाह हो जावेगा तथा तुम कहते हो उमारे स्वामी
द्यानंद सरस्वतीने हिंसा धर्मका उपदेश नहीं दीया यह कहना तुमारा
सर्वथा जूह है—निज पुत्रको पर तुम्हारे स्वामी द्यानंद सरस्वतीने
अपना नथ समाज स्थापित किया उन्मार वेद ऐसा चंचम भगुस्मृति
के पदपद्मे हिंसाका तथा भांस भानेका उपदेश है। देखो भगुस्मृति अध्याय
१० श्लोक १०५-६-७-८ इसमे ऐसे ऋषि मुनी जनोंका गांस आते
भतकाया गया है ने परम विद्वानभीये। देखो अजीर्णतः मुतंहंतु मुपा
सर्पद बुमुक्षितः ॥१०९॥

अर्थ—अजीर्णत नाभा ऋषिने क्षुधासें पीडित होकर निजपुत्रको भारा,

श्रमांसमिच्छन्नातोऽतुं धर्माधर्मविचक्षणः।

प्राणानांपरिरक्षार्थं वामदेवो नलिप्तवान् ॥१०८॥

अर्थ—धर्म अधर्मका जननेवाका वामदेव ऋषि क्षुधाका सतापा श्वान
(क्षे) उँ भांसका अनितापी हुवा।

थ॒रथा॑पञ्च

१३७

भरद्वाजःक्षुधार्त्तस्तु सपुत्रोविजनेवने ।

बठहीर्गःप्रतिजग्राह वृभोस्त क्षणोमहातपाः ॥१०७॥

अर्थ—भरद्वाज सुनि पड़ा तपस्वी निरपूत्र सहित अनभे अम तेये, जग्नाक्षुधासे पीडित हुवा तो उसने भृंखुनामा तक्षुडी बहुत सीगाय अडेणु करी.

क्षुधार्त्तश्चातुमलयागा द्विश्वामित्रःशजाघनीं ।

चंडालहस्तादादाय धर्मर्मिधर्मिविचक्षणः ॥१०८॥

अर्थ—विश्वामित्र सुनि परम विद्वान धर्मा धर्मिका शाता क्षुधा वस हुवा चांडाली के खाथे खानकी लंबडा मांस लाया.

स्वामी ह्यानं द सरस्वतीने नैसे वेद भन्ने के अर्थ अद्वे अनुस्मृति के अर्थकी अद्वे हेये, और ने यह क्षेत्रिक स्वामीज्ञने वेद भन्ने के लिंसक अर्थ नहीं किए तो ईसको रवीकार करना ऐसा है नैसे योर भनुष्यको ऐसे साहुकार समझना, यहां नमूनेके हौरपर स्वामीज्ञके वेद भाष्यका एक भन्न बिनके किए अर्थ सहित लिख होते हे.

अश्विना यज्वरी रिषो द्रव्य त्याणी शुभस्यती । पुरुभुजाचन् स्पतम् यद्य ह्यानं द सरस्वती के किए हुवे ऋग्वेद भाष्य भृष्ट ४७ का भन्न है. जित स्वामीज्ञका किया हुवा धसका अर्थ—हे विद्या के चाहनेवालो, तुम लोग (द्रव्य लाणी) शीघ्र वेगका निभित पदार्थ विद्या के व्यवहार सिद्धि करने में उत्तम हेतु. (शुभस्यती) शुभ शुणोडे प्रकाशक्षो पातने और (पुरुभुजा) अनेक खाने पीनेके पदार्थोंके हेतुमें उत्तम हेतु (अश्विना) अर्थात् जल और आजिन तथा (यज्वरी): शिल्प विद्याका संबंध करानेवाली (धृष्णः) अपनी चाली हुधर अन्नादि पदार्थोंको हेतुवाणी करीगरीका शीयाओंडा (यनस्पत) आनके समान अति प्रतिसे सेवन करो।

हम पूछते हैं क्या यह अर्थ सल है, वेदका कर्ता ईश्वर ऐसाही उपदेश हे सकता है—आहा स्वामी ह्यानं दल्लने क्या आचला द्विन जल हेलाया है. अर्थ हमें विशेष लिखनेकी कोई आवश्यकता नहीं. पूर्वोक्त विषयको पाठक गणु भवे प्रधार विचार कर सत्यसलका निष्ठुर्य कर सेवेगे.

पुरतक आहान्तिग्रभारकरपर लेणनी यत्ताना सूर्यपर धूलक्षी वृष्टि करना है. जिससे आपनाही शीशुगर्दमें भरता है, एक पुरतक भेंते नवीन

१३८

શ્રી કૈનધર્મ પ્રકાશ.

જનાયા હૈ જિસકા નામ “દ્વાનંદ છળ કપટ દર્પણુ” હૈ. યહ પુસ્તક છ્યારહા હૈ. જ્યા પૂર્ણ હો જાયેગા દ્વાનંદયોંકા યથાર્થ હાલ ખુલ જાયગા. તથ હમલી હેખેંગ કિ કૈન કૈનસા ભાઈકા લાલ બિસકા બિનર લિખનેપર બિધમી હોતા હૈ, હમારે સાંદુળસે પ્રશ્નાતર કરનેકી બિક્કત મં-
નીલડો કયા આવસ્યકતાથી ઈનકા પ્રાહૃષાગતકો તો હમલી ખાલું હે.
અલમતિ વિસ્તરેણુ. કિં બધુના--

અવધીય ઉત્તરદાતા.

પંડિત જીયાલાલ ચૌધરી.

પુસ્તક “દ્વાનંદ છળ કપટ દર્પણુ”ના કર્તા,
કૃદ્ધનગર જિલ્લા શુણાંન.

શ્રી વજ્રસ્વામીનું ચરિત્ર.

(સાધન પાઠે. ૧૧૬ મેથી.)

તે વારે હસ્તિની નેમ ડાચા એકરવાળો અને પગના ધુધરા વગાડતો
વજ્ર ધૂતપરિદી તરફ દોડ્યો. નિર્મદ્ર શુદ્ધિનાણ તેણે જર્દને પિતાના દ-
ત્સંગમાં ગેસી ને રંગેહરણું લીલા કરવાના ડમલની નેમ અદલું હ્યો.
તે સમયે વજ્રના હસ્ત ઉમલથા ધારણ એખેંક રંગેહરણું પ્રવચનદીના
શૈલે શુદ્ધ નેવો શોભવા લાગ્યો. ઉક્ષસાવમાન ઘતા કુદુર કુદુરની પીના
સરભા આડારવાળા હંતની ધૂતિ રિસ્તુ કલ્પના હેલ્પના ને રંગદ-
રંકુથા ખીંચ કોઈ વસ્તુ કુપર દાઢિ ફરજનો નહિ. તેણી સુંપસ્ત સમયની
પડીના-ની રેમન્કનાની રાંગેલી સુનંદ્ર પાડાળો દાય દઈ આ પ્રમાણે વિ-
ચારવા લાગે “નાદા ભર્મણે દિક્ષા લીધી, ભર્તાએ દિક્ષા લીધી અને પુત્ર
પણ દિક્ષા લેશો; ગાટે હું પણ પ્રવન્યા ચંગીફાર કરાં. મારે ભાઈ નથી
બર્તા નથી અને સાંપ્રતિકણે પુત્ર પણ નાંની ગાટે ગારે અહવાસથી પરિવ-
ન્યાન એપરંકરી છે, એ. પ્રમાણે પોતાના મનમાં નિર્ણય કરી સુનંદ્ર પો-
તાના ધર પ્રત્યે ગઈ અને મુનિએ. પણ તે બાળકને લઈ ઉપાધ્યે ગયા
તે સમયે વતની ઈચ્છાવાળો વજ્ર તેટલી ડમરનો છતાં સ્તનપાન ન ક

૧. હસ્ત-શુદ્ધિ.

વજસ્વામીનું ચરીત

૧૩૬

રતો હવો તેથી તેને પરિવળયા આપોને સાહુવીના આશ્રય નીચે રોંધો સંસાર થઈ અસંત વૈરાગ્ય પામેદી સુનંદાએ પણ ભાગ્યની પ્રભલતાથી તેજ ગંધાર્યાર્થ સમીપે દિક્ષા આપીકાર કરી.

એમ ભગવાન વજસ્વામી આતુફે વૃદ્ધ પામવા લાગ્યા. તે દરમ્યાન પછી કરતા સાહુઓના મુખથી સાંભળી તેઓએ પદાતુસારી² લખિધના ચોગથી આગ્યાર અંગનું અધ્યયન કર્યું. જ્યારે આઠ વર્ષની ઉમર થઈ લારે મડર્ન હું પામી આર્દ્ધાના આશ્રય નીચેથી પોતાને ડ્રાગથે લઈ ગયા અને વજસ્વામીના શુરુ અવન્તિ તરફ ચાલ્યા તેવામાં રસ્તે અભિડ ધારા વર્ષીએ વરસવા કાગ્યો. એથે ડેઢ યક્ષની શુંપરી નેવા ગુરુણ મકાનને જોઈ સર્વ સાહુઓની સાથે શુરુ મહારાજાન્સાં રહ્યા, તેવામાં વજસ્વામીના પૂર્વ જન્મના ગિત્ર જૂંભદી દેવતાઓ સત્તવની પરીક્ષા કરવાને લાંબા વણિકો વેશ લઈને આવ્યા. તે વણિક ઇપ દેવતાઓ તે મકાનની સમી પે જેણાં ઉચ્છાપવ અથ અને વૃપમ બાંધ્યા છે, જીયા જ્યાં ચરે છે, ગાંધીજીનો સમુદ્ર જ્યાં પડેસો છે તા'યુંઝા જેને વિસે નાંખેલા છે વિક્રિય વસુની શુંઘેની શ્રેણીજીનો જ્યાં દાંડલી છે, રંગેદા અનતાના પાંચો જ્યાં ડારારે લા છે, જન સન્નહું જ્યાં કોઈન કરે છે, ગુરુણી જનાવેલી છનીજો જોઈ માણુસો જ્યાં કાગ કરે છે એવો એક આવાસ બનાવ્યો. વરસાદ જ્યારે વિરામ પાંચો લારે તેઓ વંદન પર્વન આચાર્ય મહારાજાને બિક્ષાર્થે નિમન્યા કરતા આવ્યા હૃદિ નિષ્ઠા ધરેલી જોઈ શુરૂપાટે બિક્ષા દેવા માટે પીતમોન્યલ વજને આદેશ કર્યો તે સભ્યે આવસ્યકી કહી જીનું સુનીને સાથે કર્યું વજસ્વામીનું હૃદાનું હર્ષિઃ હૃદિ વિચારના રહેણાના ચાલ્યા, ભરંતુ રહ્યું રહ્યું રહ્યું રહ્યું રહ્યું રહ્યા એવા એવા નોઈ અપ્રાણી વિરાધનાથી જીને પાણ કર્યાં રેખાં દુદ્દાર નાન જરૂર હરિનો નિરોધ કરીને 'હું હૃદિ નથી' એમ કહેતા તેઓ પુનઃ જોકાવવા લાગ્યા. તેઓના અસંત આચાર્યથી વૃદ્ધિનો અભાવ જાણી વજસ્વામી ચાલ્યા અને મકાનપાનાદીએ સુંદર તે આવાસમાં ગયા લાં અન્યપાન દેવાની ઈચ્છાવાળા તે દેવને સંભ્રમિત જોઈએ નિયાન્ય બાળ સાહુએ દ્રવ્યક્ષેત્ર કાળ બાવલડે ડુપગોગ આપો. નિયાન્ય કે આ ઊજાવિનીક્ષેત્ર સ્વભાવથી કર્કશ છે લાં કુણાંગાદિ³ વરસુ

૨ એક પદ સાંભળવાથી આપો અથ યાદ થઈ જય એ પદાતુસારી લખિયા. પૂર્વ ભવે કરેલા ગાનના ક્ષોપશમથી એ લખિ પ્રાપ્ત થાય છે.

૩ કાળાથી અનાવેલી.

૧૪૦

શ્રી જૈનર્થમ્ પ્રકાશ.

ક્ષાંથી ? વળી પ્રયત્ન વરસાહે એ વસુનો સંભવ પણ ન હોય; હેનાર અનિમેય ચક્ષુવાળા અને ભૂતળને વિષે નહિ રૂપી કરતા ચરણવાળા છે; માટે નિશ્ચયે આ દેવપિંડ છે સાધુને એ ન કદે માટે આણાડાર અણણ કર્યા શિવાયજ યુદ્ધ સમીપે જઈ. એગ વિચારી બિક્ષા લીધા શિવાય પાછા વળ્યા તે સમયે તેના સત્વથી આશ્રય પામેલા દેવતાએ પ્રગટ થઈ ઓલાયા—હે વજ ! અમે તારા પૂર્વ જન્મના મિત્ર જ્ઞાંભક હેવતા ધીએ. અને તને જેવા માટે આવ્યા ધીએ? હજુ પણ અમે તારા મિત્રજ ધીએ.' એમ કહી સંતોષ પામેલા તે દેખોએ કરેલી માયાતું જણે નિષ્ઠ્યે હોય તેમ વૈકિયિકલભિંબ નામની વિદ્યા આપી.

થીજુ વખત જેઠ માસમાં વિહાર કરતા વજસ્વામી પ્રત્યે તે હેવાએ વખ્યિકૃતે આવી ધૂતપુરુષ વડોરાવવા પ્રાર્થના કરી. તે સમયે પણ તેના આવાસ પ્રત્યે જઈ ઉપરોગ વિહુર સ્વામી દેવપિંડ જાણી પૂર્વગત અણણ કાંચ શિવાય પાછા વળ્યા; તે સમયે વજસ્વામીના તે ડેન મિત્રોએ પ્રસન્ન થઈ આકાશગામિની વિદ્યા આપી.

એમ ગચ્છ મધ્યે વિહાર કરતા વજસ્વામીને પદાર્થસારી લભિંબના ચોગથી અંગીઆર અંગ નિશ્ચળ થયા, એ ઉપરંતુ પૂર્વગત જેજે વસુઓ પહું કરતા અણણ કરી તે તે સર્વે તે મેધાવિ જાળસાધુઓ અણણ કરી. જ્યારે જ્યારે ધીલ સાધુઓ પહું કરવાને માટે કહે લારે ગર્વરહીત તે જાળ નિદ્રાળુંની જેમ કાઈ શુણું શુણુરવ કરે. સાધુઓની આજાનો ભંગ કરવામાં ભીર ચેવા વજ મહારાજ ચેતાની રક્ષિત ન પ્રગટ કરતા પ્રગટ-પણે કાઈ ગણગણુાઠ કરી ધીલઓને પહું કરે એ એવું જણુંને.

એક દિવસ મધ્યાનહેલે ધીલ સાધુઓ બિક્ષા કરવાને ગયા અને આચાર્યવર્ય વડીનીતિ કરવા આદાર ગયા. પાણી ઉપાયના રૂપું નરીકે શોકલા તે જાળ સાધુ રહ્યા તે સમગે કાખપિને સર્વ સાધુઓના મંદિરકાન જેમાનીને શિખ્યોની ગઢે આચાર્યની એગ પોંચ આમન દાદર કેન્દ્ર, પ્રાણ વૃદ્ધાળના અભિનાશ સદ્ગુરુ 'નનિદી' વાયના આપ્યાને આરંભ કર્યો. એ પ્રમાણે અંગીઆર અંગ અને પૂર્વગત વિપરોણી વાયનાને ફૂર્યે પાછા આવતા ગુરુએ સાંભળી. વસિતિદાર સમીપે આવી ગણગણુરવ અવણું કરી ગુરુપાદ વિચારવા લાગ્યા કે 'શું' સાધુઓ જથી પાછા આવ્યા? નિક્ષા

૧ ભાડું. ૨ ધેણર.

ધર્મસ્વામીનું ચરોલ.

૧૪૭

મહાયુદ્ધને આરેબા તેણો મારા આવવાની વાગ જોઈ સ્વાદ્યાય કરે છે? કાશવાર ઉભા રદ્દી વિચાર કરી પહીલ ફેટ આચાર્યવદે નાષ્ટથું કે આતો જાગર્દિ વંજ વાચના આપતો હોય એવો ધ્વનિ છે. એ પૂર્વગત વિષયતી અને શોકદશ અંગની વાચના આપે છે તે શું ગંભીરાં બણ્યો હશે? નિ અથે આ જાળતું ચરિત્ર વિસ્મયકારી છે. સાહુગો આધ્યયન કરાવે છે ત્યારે એ ખાળક આઠલા ગાટેજ આગસ કરે છે. જાગપણાથી પઠન કરવામાં આગસું છે એવું જાણ્યો અમે તેને શિક્ષા કરીએ છીએ. તોપલ મહિન યુદ્ધિત્વાળો તે ખાળ જરૂર પણ નાં નાં હિતાં રચારા વચ્ચનાં અનગત કરતો નથી. એ એ ખાળ મારા આવવાથી લન્નાન ન પામે એટા ધારી રિષ્ટિય શુણે રોમાંચિત ઘેણે યુદ્ધપાડ કાર્ટિક પણ હંડ્યા. પછી મંડાએ શાખદે નૈપોલેકી કણી એટને ચુદનેં શાખ સાંચાળી વંજ પણ એસન ઉપરથી હણી ગયો. શુરૂ ગંદ ગતિઓ આંદર પરેશ કરે તેઠવાંન સર્વે ઉપબિંદો સંસ્કરણને મુકી દીની. પછી શુરૂની સામે આની તેમનો હંડ અણથું કણો અને પગતું માનજીન કરવા લાગ્યો. વંદન કરવાનાં શુરૂના ચરણ કમળની રજ પોતાને ભાણે લગતી અને આસન ઉપર એક પછી શુરૂના પાદ પ્રાસુક જળથી ધોઈ તે પાણી મસ્તકે ચડાવ્યું. વાંચનાર! | કેવી એતી શુરૂબક્તિ છે એ વિચાર કર. પોતાને ચાઢ્ય શાન છતાં-તેથા જરૂર પણ ગર્વિત ન થતાં-આવી રીતે શુરૂ મહારાજાની ભક્તિની કરવી એ વિનય શુણુંની અલિહારી સમજ અને એવાજ પ્રકારનો વિનય પ્રાપ્ત કરવા ઉત્સુક થા.

આચાર્ય પણ તેના આવા શુણ્યથી વિચારના કાણ્યા કે આ ખાળક મહાત્માનો છે, શ્રુતસામનોનો પારગાળી છે અને અન્યાન્ય મહાયુદ્ધનાં વંજ સમાપ્ત છે. માટે એના અદાનાને નાં જાણુનારા એવાં સાંચુંગો એની અ. એ ન એ એનો! હાં, એ એ એની રાત્રી સમયે સર્વ શિષ્યોને ઐએ હાતને શુરૂ મન્દાશનને રચ્યું કે ‘કંદે આમારે આસુક આમ પ્રતો જન્મું’ છે. જીંને નશે દિવસ આમારી રિધિતિ થશે? તે સમયે યોગ પ્રતિપત્ર રિધોનું વિચારના કરી કે ‘મન્દાશના’ જીનારો વચ્ચનાચાર્ય કોણું થશે?’ શુરૂગો આંદશ કણો કે ‘વંજ તમારો વચ્ચનાચાર્ય થશે?’ અને તે હુકમ કાર્ટ પણ વિચાર કર્યા રિષ્ટિય ભજિતાનું શિષ્યોએ અંગીકાર કણો.

શાન્દુંદુ.

૧૪૨

શ્રી જૈનધર્મ પ્રેકાશ.

પ્રતિક્રમણ.

(જ્ઞાંધ્ય પાને થી.)

એ પ્રગાણે ચારિનાચારાદિની શુદ્ધિ કરવાના વિધિને વિષે તે સંબંધી ઝર્ય સિદ્ધિને ઈચ્છનારો આપણું, ચારિનાચારાદિના આરાધક ભગવાનું, આચાર્ય, ઉપાધ્યાય અને સર્વ સાહુ મહારાજને સમૃદ્ધ પ્રકારે નમસ્કાર કરી આનિચાર રૂપ આરથી ભરેલો હોય તેમ કષાયપ મેટિ નીચી નમામી-શિર ભૂતળે રૂપાર્થી-સક્ત આનીચારનું ઝીંગડક ‘સત્ત્વ સત્ત્વ દેખસ્ત્રિય’ એ સૂત ગોસે. એ સૂત સર્વ પ્રતિક્રમણનું ઝીંગડક જાણ્યું, ઝીંગડના ઉપન્યાસ વડે ભગવાનનું દરીનાં તેને સત્ત્વ સંખ્યાની સામાન્ય વિશેષ રૂપતા પમાય છે. ખાલ પણ ધણા અથેને વિષે એવા ઝીંગડ હોય છે, તે પ્રગાણે અતે પણ જાણ્યું. એ સૂતનો અર્થ આ પ્રમણે છે-સર્વે દિવસ સંખ્યાની અતી-ચાર-હૃદ્ધિત એટલે પર દેપાદિક હુદ્ધ કાર્યો ચિંતવાથી થયા હોય તે— હૃદ્ધાપિત એટલે ઉપયોગ રહીત આનિષ્ટ હૃદાદિ જાપા જોલવાથી થયા હોય તે—દૃષ્ટ્યોધિત એટલે ઉપયોગ રહીત હાલવા ચાલવાથી તથા કામાસનાદિક કાર્યની હુદ્ધ ચેદા રૂપ પ્રવૃત્તિ કરવાથી થયા હોય તે—આર ગિદ્ધા થાણો. આપણા પ્રતિક્રમણનો હેતુ આજ છે. પ્રતિક્રમણુમાં આ સર્વે કિયા વિરતારથી કરવાની છે માટે આ સૂતને ઝીંગડ રૂપ જાણ્યું.

પણ હૃદીને પ્રથમ ચારિનાચારની શુદ્ધિને અર્થે ‘કરેગિલાંતે સામાઈએ’ અને ‘ઈચિછાગિ ઠાગિ કાલેસંગ’ વિગેરે સુચો એવી કાયોત્તસરી કરે. સર્વીક્ષક-જાનાચારાદિની શુદ્ધિ અર્થે કાયોત્તસરી કર્યા શિવાય પ્રથમજ ચારવાચારની શુદ્ધિને અર્થે કાયોત્તસરી કર્યો તેનું શું કારણું ?

ઉત્તર—જાનાદિને વિષે ચારિન એ એક છે. કારણું એ સુદિતનું અનાંતર કારણું છે અને જાનાદિ પરંપર કારણું છે. સંપૂર્ણ ચારિન ને યથા ઘણાત તે શૈલેશી અવસ્થાને વિશેજ પ્રાપ્ત થાય છે અને તદનાંતર પ્રાણ્ય અવસ્થ સુરૂત પામે છે. સંપૂર્ણ જાન એટલે ડેવગરાતન પ્રાણ્યને ગોડાની આદી ચાર થાતી કર્મનો ક્ષય થવાથી થાય છે પણ તદનાંતર અવસ્થ સુરૂત પ્રાપ્ત થાય નાંની; કારણું કે

પ્રતિક્લિષ્ણ.

૧૪૩

જીન પાન્યા પછી કેવળી અવસ્થામાં આયુષ્ય હોયતો વિચરે છે. જી-
ઘન્યથી ડાઈ પ્રાણી અંતગડ કેવળી થાય તોપણું તેને સપોગી અયોગી
શુષ્ય સ્થાનકના ભાવથી એક અંતસ્તુદર્શિતનું અંતર હોય છે એટલે કેવળ
જીન થાય પછી થથા ઘ્યાત ચારિત્ર પ્રાપ્ત થાય અને તે પછી પ્રાણી મુ-
ક્ત થાય કહું છે કે.

**જભા દંસણ નાણા સંપુન્નકલંનદિંતિપત્તેઅં
ચારિત્ર જુઆદિતિઅ વિસિસ્સએ તેણચારિત્ર ..**

“ચારિત્ર વિના જીન અને દર્શન પ્રત્યેક સંપૂર્ણ ઇણ આપતા નથી
પરંતુ ચારિત્ર શુક્ત હોય તો સંપૂર્ણ ઇણ આપે છે તેથી ચારિત્ર ગરિષ્ઠ છે
તથા—

સમ્મતંઅચારિત્રસ્સ હુજ્જભયણાએનિઅમસોનથિ ।

જોપુણ ચરિત જુત્તો·તસ્સઉ નિયમેહ સમ્મતં ॥

અચારિત્રવંતને ભજનાએ સમકિત હોય પણ નિયમ નથી પરંતુ
ચારિત્ર શુક્ત પ્રાણીને નિયમે સમકિત હોય.

વળી જોત્ર વૃદ્ધ પુરુષને સહયોગી અને પરાણી બાળકને પ્રણામ ન
કરે પરંતુ રાન્ય લક્ષ્યની અંલાકૃત બાળક હોય તો તેને સર્વ નમસ્કાર કરે
એજ પ્રમાણે કેવળજીની અહસ્ય હોય તો તેને જન સમુહ પ્રણામ કરતો
નથી પરંતુ ચારિત્રે કરીને સંશુક્ત થાય લારે તેને જન સમુહ અને શક્તા
દી હેઠે પણ પૂછે છે. આ કારણથી કેવળજીનથી પણ ચારિત્ર અધિક
ગણ્ય છે અને તેઠલા ગાટેજ વિચ્કણું મનુષ્યો તે પ્રાપ્ત કરવાને ઈચ્છા
વાંત હોય છે. એવી રીતે જાનાદીને વિષે ચારિત્ર ગરિષ્ઠ છે માટે પ્રથમ ચારિત્રા
ચારની શુદ્ધિને અથે કાયોત્સર્જ કરવો.

કાયોત્સર્જ નવ પ્રકારે થાય છે—જીમા ૨ઢી કાયોત્સર્જને વિષે ધર્મ
શુક્તથી ધ્યાન ધ્યાય તે જાન્યિતોચિદ્ધત. ૨ નેતે વિષે ધર્માહિયારમાંથી ડાઈ
પણ પ્રકારદું ધ્યાન ન ધ્યાય તે દ્રવ્યોચિદ્ધત. ૩ નેતે વિષે ચાર્ત્ત રૈદ
ધ્યાન ધ્યાય તે દ્રવ્યથી જીબદો અને ભાવથી એઠેદો એટલે જાન્યિતોચિદ્ધત
નથી. આ પણ પ્રકાર જીમા ૨ઢીને કાયોત્સર્જ કરવા આશી છે. ૪ એસીને
કાયોત્સર્જ કરે અને નેતે વિષે ધર્મ શુક્તથી ધ્યાન ધ્યાય તે દ્રવ્યથી એઠેદો
પરંતુ ભાવથી જીબદો છે ગાટે નિપણ્યાચિદ્ધત ૫ ધર્માહિયાર ધ્યાનમાંથી
ડાઈ પણ ધ્યાન ન ધ્યાય તે નિપણ્યાચિદ્ધત. ૬ નેતે વિષે ચાર્ત્ત રૈદ ધ્યાન

१४४

श्री क्लैवर्थं प्रकाशं

ध्याय ते निषष्ठेणा निषष्ठयु आ वा बोद्ध ऐसीते क्षयोत्सर्गं करवा आथी
छ. सुनो । क्षयोत्सर्गं करे चाने ते विषे धर्म शुद्धता ध्याय ते
निष्पत्तेविष्टत एटले द्रव्ये सुनेको छे पशु भावत्थी उभद्वा गणाय का-
शु शुभ ध्यानने विषे प्रवर्त्तमान छे ८ ज्ञेन विषे धर्मादि यार ध्यान
न ध्याय ते विषन, ५ ज्ञेन विषे आर्त रैदू ध्यान ध्याय ते निष्पत्त नि-
पत्त गो प्रकारना नव भेदगांथी प्रथम बोद्ध ने द्रव्ये शरीरथी पशु उगा
रहीने अने भावत्थी शुद्ध परिषुमत्वं यहीने उचित्तो उचित्त ते रीते
क्षयोत्सर्गं करवो,

अपूर्णु.

वर्तमानं चरचा.

श्री मुर्हीदिवाहमां सम वसरखुनो भाषेऽथव.

आयु साहेय राय धनपतिसिं हज्जता तरक्षथी आ गहोत्तव अङ्गुज
हाठ साये थमो छे तेगां बोंगु तेमनां पुन तरक्षथी उज्जमण्डुं पशु भांडाण्डुं
हु. उपगरण्डु सारा भेगव्या हुता. हृतीनी धीमाने स्थानके धीमानो
सुझी हुती. सद्वरु भहोत्तवमां प्रथम नेपे दीवसे आयु साहेयना रक्षी भेना
कुंवरीये सोना इपाना यवथी भग उवंतनी सन्मुख स्वस्तिक छें. हुतो
अने साचा भोतीवडे भगवंतने वीधाच्चा हुता. ठीज पथ साचा भो-
तीना स्वस्तिका विशेषे थया हुता. त. आ स्वस्तिक दृष्टिको नेतां श्रेष्ठिक
राजना समयनी प्रतीभा उक्ती हुत्तुनी. छेल्से दीवसे आयु साहेयना पुन
महाराज साहेये भोतीनो स्वस्तिक. क्तीने तेना उपर हीरा नडीत सुवर्णु
नी सोपारी सुझी हुती आ पशु झोचाक अद्वितीय कार्य बन्नु छे. वरवेदाना
भोद्धाहमां वरवेदां दररेज चउता. हुता तेमां लक्ष वरवेदां भोद्धा आउ
परथी चया हुता तेने विषे पशु त्रेसु एक वरवेदातो अङ्गुज भोद्धा चउयो
हुतो ने उ लांथी छ गाड उपर. अङ्गुजम वलरगां श्री नभीनाथतुं गंदीर
छे लां लाई ज्वामां आव्यो हुता. तर्जु १ छेल्से दीवसे भोद्धुं स्वामीवन्दणा कर-
वामां आव्यु हुत्तेमां इपैचानी प्रभावना क्ती हुती. आ शिवाय च-
तुर्भासमां अने तान पञ्चभीने दीवरे रेखे पशु रायुआडाहर विसूत्यां दृष्टेती-
या विग्रेती तरक्षथी व्याघ्यानमांरणु छे इपैचानी प्रभावनामाँ यही हुती.
आ अधा उपगार मुनी हुंसर छे विजयल भेदाशवना चतुर्भास रहे-
वाथी तेमर धमो उपदेशयी थयोहु २ चुम्पीराजना भगवं लक्ष्याय लां
आ भमाणे सासगोनती थयान फूँ प्राणि हुती भी अङ्गुता !

अनुसन्धान

पुस्तकोनी पहोच.

श्री रंभा मंजरी नाटिका जैनी—मी.नयन्यंद्वस्त्रि द्वात् सदरुद्ध अं-
थ सूत्र मागधी अने टीका चंस्कृत भाषामां छ. कैन वर्णने
भरीद करवा लायक छ. किमत आठ रुपाना छ. बेधमे तेषु
श्री अमदानाद शास्त्री रामयंद दीनानाथ (प्रसीद्ध कर्ता) ने
ठे. सांकेतिकी जटीनी पेठामां लाख्युः.

श्री वैराग्य रत्नाकर भाग पहेलो—आ भागमां श्री वैराग्यश-
तक घडुज विस्तार युक्त अर्थ तथा प्रासादीक कथाओम्ये सं-
युक्त समावेश छ. कैन घंड्युओने अनश्य भरीद करवा लायक
अने नाम प्रभाष्य युश्वाणो अर्थात् घरेघर वैराग्य रसने
समुद्रज छ. प्रसिद्ध कर्ता शास्त्री रामयंद दीनानाथ तथा श्रावक
क्यराभाष गोपागदासे घडुज उत्तम प्रयास करेलो छ. किमत
युक्तना अने प्रयासना प्रभाष्यमां एक इपीओ छ ते वास्तविक
छ. बेधमे तेषु अमदानाद प्रसिद्धकर्ताने लाख्युः.

उपरनी खने युक्तानी एकेक प्रत प्रसिद्ध कर्ता तदृक्थी अ-
भने लेट दाखल भणेज्ञी छे ते स्त्रीकारीम्य छाओ. सदरुद्ध खने
युक्त अमारी एकाक्षिसमांथी पञ्च भणी शक्तो. परदेशवाणीम्ये
पास्टेज युद्ध गोकलाखुः.

लवाजमनी पहोच.

१-३	शा अवश्यलाल फुलयंद
४-२	शा अमरयंद न्यालयंद
२-६	शा अमनादस दीरायंद
१-३	शा दीरायंद वेलु
१-३	शा फुलयंद घेयर
२-६	शा लक्ष्मीयंद भोडनलाल
०-५	शोइ गांडा लायु
२-६	शा नाययंद रतनलु
१-३	शा चर्तीयण पुडेताम्भ
१-३	शा चर्तुलभ गोतीयह
१-३	शा लोक्त गोषुशी
१-३	शा फुल गंगल
१-३	शा भोतीलाल रामयंद
१-३	शा भोतुलक्यंद कुपुरयंद
१-३	शा चामुक्त खुगयंद

१-३	शा जसराज लेमल
१-३	शा जगाळयन वभणयंद
४-१२	शा भीताभरदास शांतिदास
१-३	शा मुलायंद रामलु
१-३	मेता हेवकरणु अटेकरणु
१-३	मेता काणीदास मेतीयंद
१-३	शा करुरयंद उपयंद
१-३	शा चुनीलाल प्रेमयंद
२-६	शा उमेह घेयर
१-२	शा धनराज लेमराज
१-१२	शा वीरयंद अमोयंद
१-१२	शा क्षुपुरयंद लभग्नीयंद
१-१४	शा सुदरुद्ध फरयंद
१-३	भरुशाणी धारशी मूल
१-८	शा फुलयंद धरभशी

०-४ शा कुरमचंद वधराज
 १-३ मेता इगनायज्ञ लेखल
 १-४ होशी डेशवल्ल पद्मथी
 १-३ होशी लदवल्ल सुशास्त्रचंद
 १-३ शा तकड़चंद भाषुक्कचंद
 २-५ वेरा सुलाण्युचंद ज्यवराज
 ३-८ शेठ मेती भावाज्ञ
 १-३ शा अभरयंद डेशवल्ल
 १-० शा अडार उज्जम
 १-३ शेठ घेला परवधान
 ८-३ होशी घेयर टोडरथी
 २-६ शा वीरयंद ज्यवाभाई
 ०-३ क्षा तकड़चंद भाष्यचंद
 १-२ शा ज्यवयंद उपुरयंद
 १-३ शा हीरायंद कुक्स
 १-३ मेता चुलायचंद ज्यवा
 १-४ होशी कुरशनल्ल हेमचंद
 १-३ होशी काणीदास डेशवल्ल
 १-२ हुकर जेराम गीला
 १-३ शा दामा धारा
 १-० परी भीमा ज्वेर
 १-३ श्री काणीआडनो संध
 २-० होशी इतेयंद हुकमचंद
 २-५ वसा सोभयंद घीमल
 २-६ वेरा सवाधयंद तारायंद
 १-३ शा उपुरयंद इतेयंद
 ०-१२ शेठ हीपयंद भाषुक्कयंद
 १-३ शा चुलायचंद रतनयंद
 १-३ ज्वेरी हरणवन भगनयंद
 १-३ शा भगनभाई कुत्तरयंद
 १-३ शेठ साराभाई भगनभाई
 कुरमचंद
 १-३ शा नवलयंद मेतीयंद
 १-३ शा ज्वेनयंद ज्यवाभाई
 १-३ ज्वेरी आलाभाई भगनभाई

१-३ ज्वेरी आलाभाई छोटालाल
 १-३ रा. रा पौष्टिलाई नेशंग
 १-३ शा राणल्ल लालाल
 १-१२ परी. नानयंद नेशंग
 २-५ शा गोपाणदास चीताभण्डीदास
 १-३ शा मेतीयंद नेमीदास
 १-३ वेरा कुलाण्ड लीलाधर
 ३-० रानेशी घेनमल नरशंगल
 १-३ वेरा हरणवन लालयंद
 १-३ शा घोयाभाई ग्रेगयंद
 २-८ शा हीरायंद सुलाण्ड
 १-३ शा ज्यवाभाई छोटाभाई
 १-३ ज्वेरी सहपयंद घोणीदास
 १-३ शा सवयंद लालयंद
 २-६ शेठ दक्षपतभाई भगुभाई
 १-३ शा हुमयंद भाषुक्कयंद
 ७-२ शेठ मेहनभाई भगनभाई
 १-३ शा रतनयंद वसतायंद
 १-३ शा कुदरयंद वसतायंद
 १-६ शा धूमरी लभमीयंद
 १-३ शा जेठाभाई चुलायचंद
 ३-८ ज्वेरी हीरायंद मुख्यरदास
 ४-१२ ज्वेरी घीगयंद मुगयंद
 २-६ वासा हेमयंद ज्यवा
 १-३ शा भाषुक्कभाई रण्यथी
 १-३ शा वीरयंद रतनाज
 १-३ शा गणेश वेलल
 १-३ जैनी सुकुदलाल जैनुमल
 १-३ शेठ उभाभाई हीशंध
 २-६ शा उबाईया घोभण्ड
 ४-० शा दामल डानल
 १-३ शा कुअरल धारथी
 १-३ शा ज्याभाई गीयाभाई
 २-५ परी. आलाभाई गीरधरलाल
 १-३ परी. शामणभाई नथुभाई
 २-५ होशी शुद्धरकाल नीरयंद